



जिन स्वयं थई जिन आगधे,  
ते मही जिनवर होवे रे ॥

भगवान मिलने के बाद स्वयं भगवान बनना  
**यही भगवान की अगम अनूप पूजा है...**

**अंजनशलाका प्रतिष्ठा**

के पावन अवसर पर हे परमात्मन्! हमारे उपर अपनी कृपा का नेह बरसाओ...

हमारे हृदयमंदिर में आकर आप बिराजो...

हमारा कल्याण करो.. हमारा उद्धार करो...

सकल श्रीसंघ को मान, सम्मान, बहुमानपूर्वक निमंत्रण

**श्री आदिनाथ जैन संघ**

मु.पो.: रेवतड़ा-343 001, जिला : जालोर (राजस्थान).